तीन-चौथाई और
आधी-कीमत की किताबें

मोहम्मद खादीर बाबू

चित्र: सुरेश बी. वी.

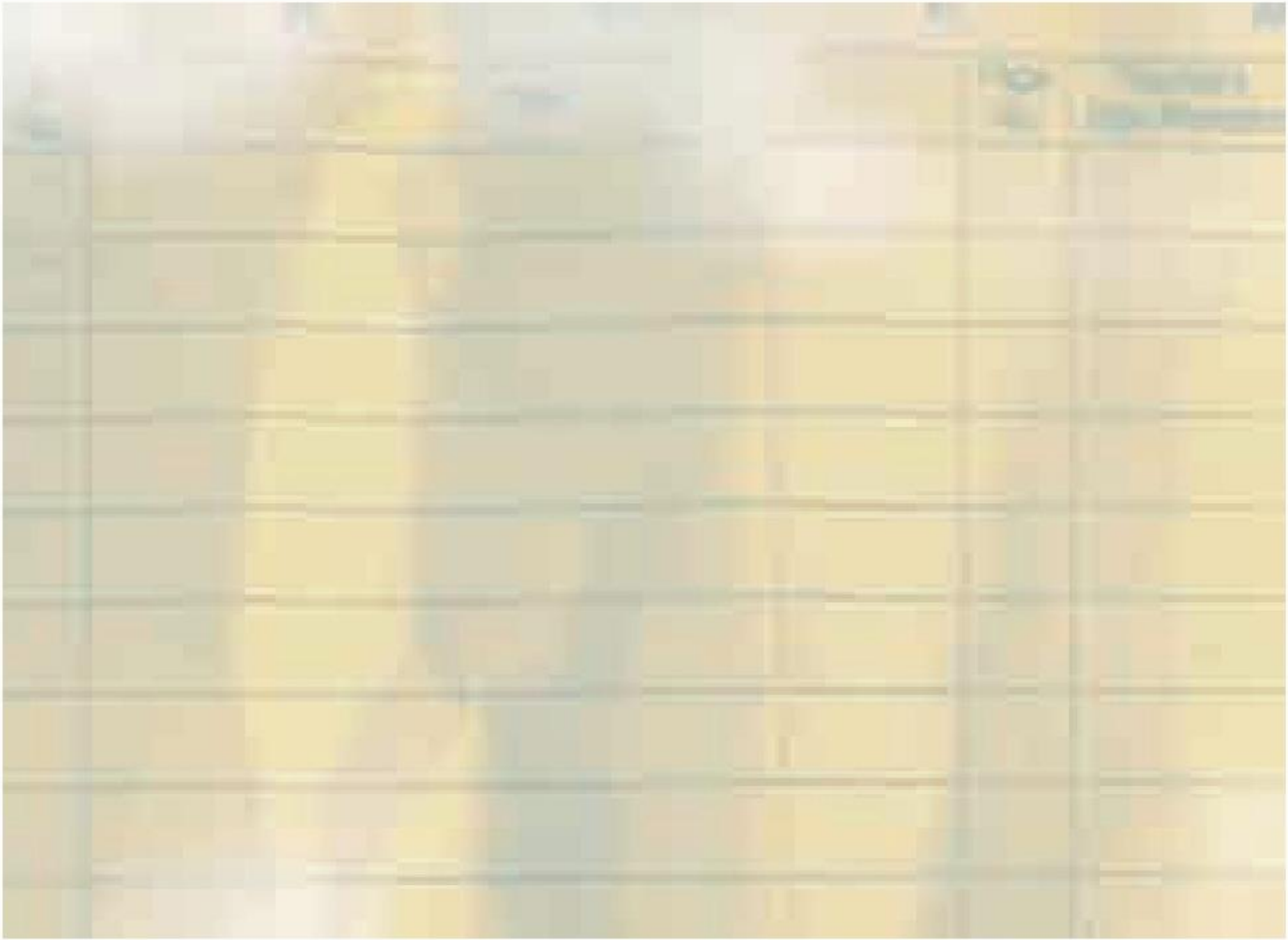

छात्र कृपया ध्यान दें. हमारे हाई स्कूल में सभी कक्षाओं के लिए आवश्यक पाठ्यपुस्तकें आ चुकी हैं. जो बच्चे उन्हें खरीदना चाहते हैं वे कीमत का भुगतान कर सकते हैं और तीसरी घंटी के बाद उन्हें ऑफिस से खरीद सकते हैं. लेपाक्षी नोटबुक्स के आने में अभी कुछ समय लगेगा. जो लोग नोटबुक का एक सेट चाहते हैं उन्हें अड़तालीस रुपये की अग्रिम राशि देनी होगी. यदि बाद में कोई नोटबुक खरीदना चाहता है तो उन्हें उपलब्ध कराना संभव नहीं होगा.

हस्ताक्षर:

हेड मास्टर, विश्वोदय

हमारे स्कूल के ऑफिस रूम के बगल की पीली दीवार पर लटके ब्लैकबोर्ड पर सफेद चॉक से लिखा हुआ यह नोट था.

पाठ्यपुस्तकों के बारे में एक बात: उनसे मुझे कोई सरोकार नहीं है.

नोटबुक्स के बारे में अगला बिंदु: उनसे मुझे चिंता होती है.

मैं कहता हूं कि पाठ्यपुस्तकों से मुझे कोई सरोकार नहीं है क्योंकि मुझे जन्म देने वाले माता-पिता ने शायद ही कभी मेरे लिए छठी या सातवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों का नया सेट खरीदा हो. मुझे हमेशा पुरानी पाठ्यपुस्तकों से ही काम चलाना पड़ता था. अब भी, चूँकि इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि वे पाठ्यपुस्तकों का एक नया सेट खरीदेंगे, इसलिए मैंने सोचा क्यों न मैं किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करूँ जिसके पास मेरे लायक उपयोगी पुस्तकें हों?

इस खोज के दौरान, मैं अपने घर के करीब रहने वाले सेट्टी के लड़के गाडेमसेट्टी रमेश से मिला. वो अभी नौवीं क्लास में है. उसमे अभी आठवीं पास की है. उसके पास वो आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकें होंगी जिनकी मुझे ज़रुरत है. मैंने फैसला किया कि अगर मैं पाठ्यपुस्तकें खरीदूंगा तो उसी से खरीदूंगा.

क्यों? क्योंकि सेकेंड हैंड किताबों की अपनी ही कहानी होती है.

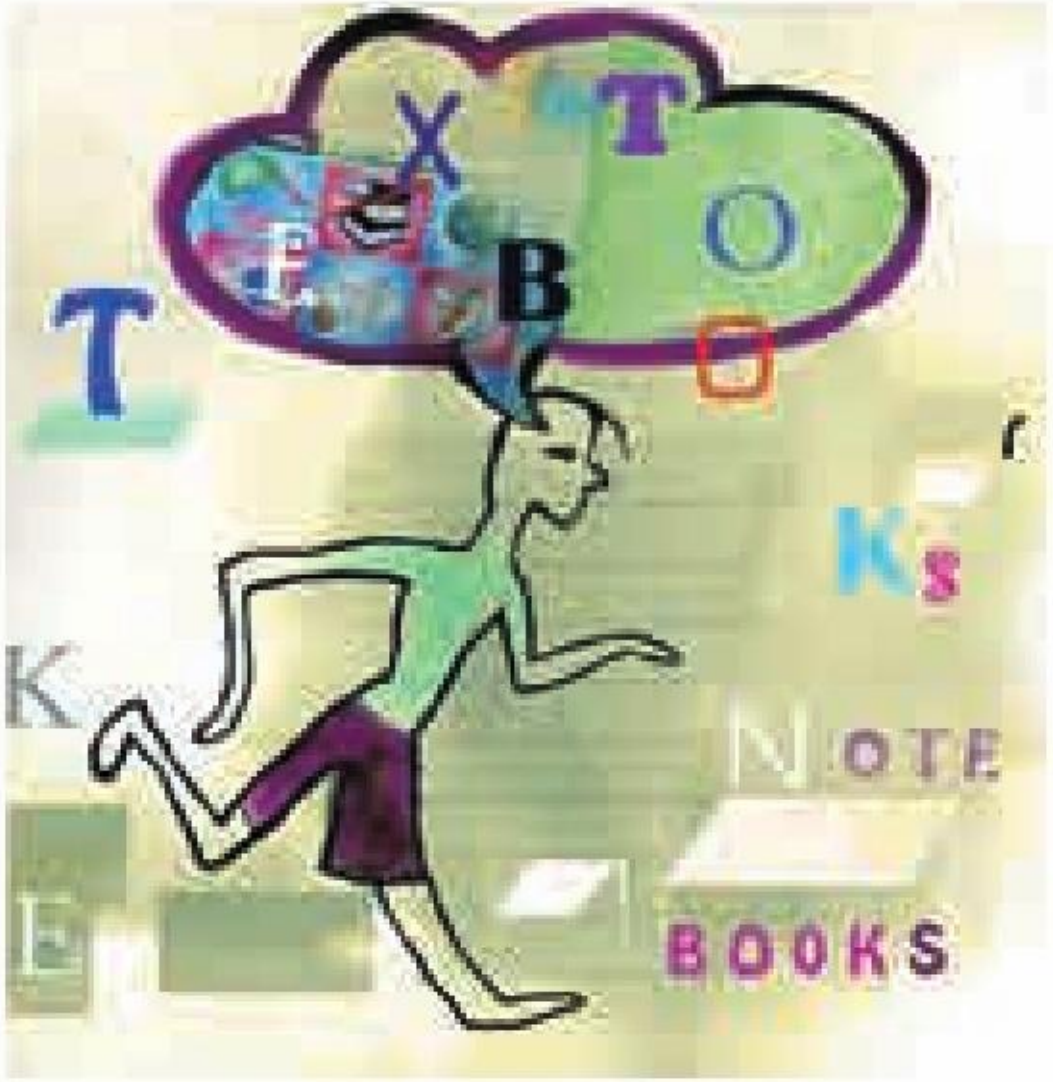

NOTE
BOOKS

उनमें तीन कैटेगरी हैं:

पहली श्रेणी - यदि कोई उसी वर्ष पाठ्यपुस्तकों का एक नया सेट खरीदता है, उन्हें भूरे रंग के कागज से ढकता है ताकि वे गंदी न हों, कपड़े की दुकान पर जाकर, साड़ियों को लपेटने वाली पारदर्शी प्लास्टिक से उन्हें कवर करके स्टेपल करता है, फिर साल भर एक भी पेंसिल या पेन का निशान बनाए बिना अंदर के पन्नों को साफ़ रखता है; फिर, जब वो इन किताबों को अगले साल बेचेगा तो उसे उनकी तीन-चौथाई कीमत आसानी से मिल जाएगी.

इसका मतलब यह हुआ कि आठ रुपए की किताब छह रुपए में बिकेगी.

लेकिन जब कोई नई पाठ्यपुस्तकों की अच्छी देखभाल नहीं करता है, उन्हें कवर से नहीं ढकता है, उन्हें किसी को भी उधार दे देता है, और अंदर के पन्नों को गंदा करता है - तो वे किताबें आधी-कीमत पर बिकेंगी.

इसका मतलब यह हुआ कि फिर उसे आठ रुपये की पाठ्यपुस्तक के सिर्फ चार रुपये ही मिलेंगे.

फिर एक और श्रेणी है: जब कोई शुरू में पुरानी पाठ्यपुस्तकें खरीदता है, तो उन्हें और खराब करता है उनके पन्ने मोड़ता है - तो वे किताबें "बज्जी-बज्जी" श्रेणी की होती हैं.

ऐसी किताबें एक-चौथाई कीमत पर बिकती हैं.

ऐसी आठ रुपए की किताब के सिर्फ दो रुपए मिलेंगे.

लेकिन हमें "बज्जी-बज्जी" पाठ्यपुस्तकें क्यों पढ़ें? या पुरानी-मुसी आधी-कीमत की पाठ्यपुस्तकें? हमारे पास केवल तीन-चौथाई मूल्य पाठ्यपुस्तकें होनी चाहिए. और वो भी हमें सिर्फ आधी-कीमत पर मिलनी चाहिए.

चूँकि इन सभी शर्तों को पूरा करने वाली पाठ्यपुस्तकें केवल गाडेमसेट्टी रमेश के पास थीं, इसलिए मैं उसके पास गया और मैंने उससे पुस्तकें माँगी.

मेरे चेहरे की ओर देखे बिना ही उसने कहा, "बिल्कुल नहीं! मैंने अपनी पाठ्यपुस्तकों को बड़े करीने से रखा है! तुम चाहो तो उन्हें तीन-चौथाई कीमत पर खरीद सकते हो, लेकिन आधी-कीमत पर नहीं. देखो, मुझे अभी कुछ और पैसे जोड़कर नौवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकें भी खरीदनी हैं?"

मुझे नहीं पता था मैं उससे क्या कहूँ इसलिए मैं अपना सिर खुजलाते हुए उसे घूरता रहा.

वो देखने में पतला और कमज़ोर दिखता था - जैसे वो पतली हवा में गायब हो जाएगा, लेकिन वो एक बार में एक किलो चना खा सकता था. वो अपनी जेब में चना भरता था और फिर दिन भर चने कुतरता रहता था. जब वो हँसता था तो उसके काले मसूढ़ों पर चने के छोटे-छोटे टुकड़े साफ़ दिखाई देते था.

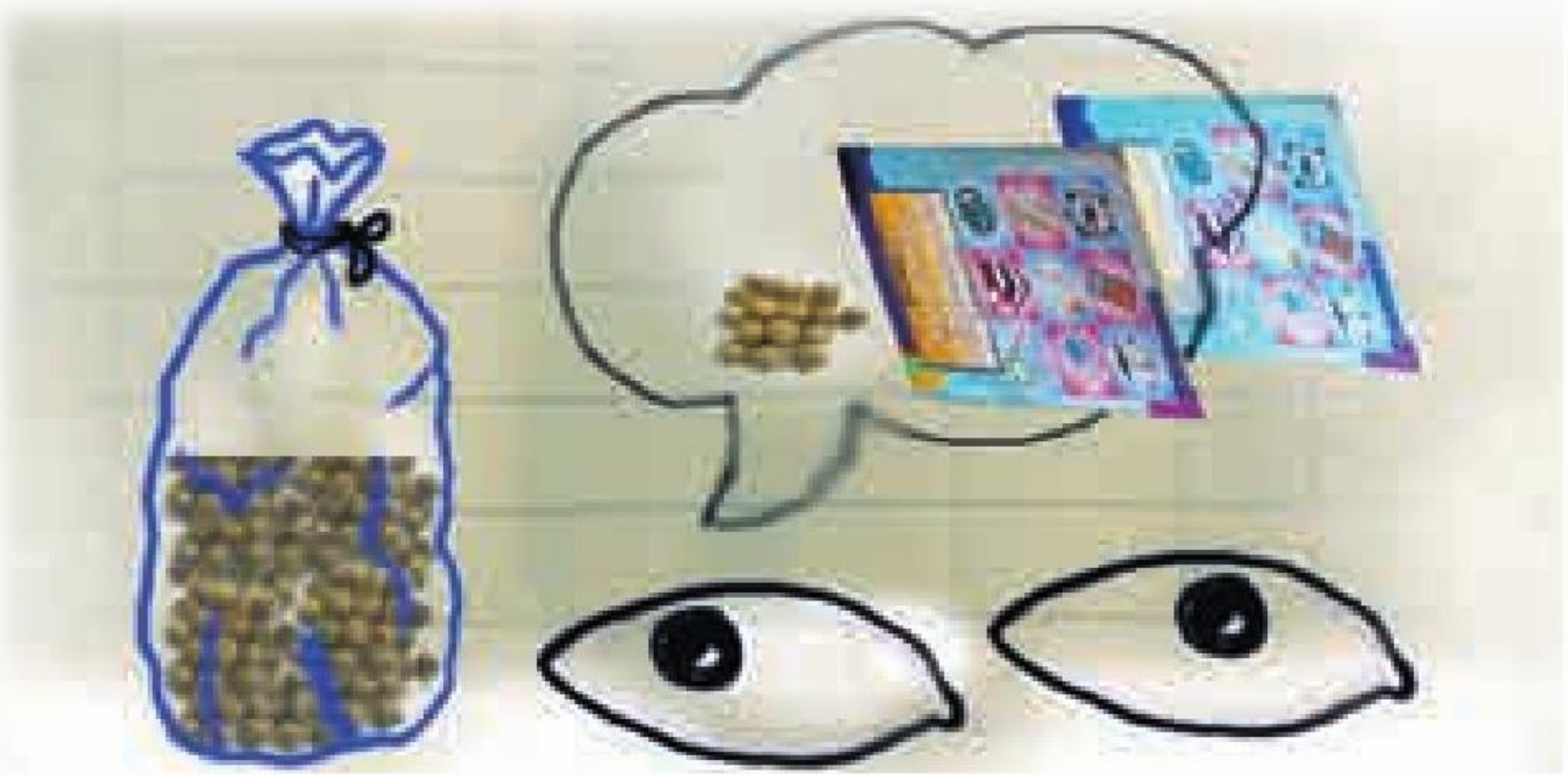

उन टुकड़ों को देखकर मुझे एक विचार आया. "अरे रमेश! मेरे पिता एक दाल मिल की मोटर की मरम्मत के लिए नेल्लोर गए हैं. उन्होंने कहा है कि जब वे वापस आएंगे तो उन्हें आधा बोरा चना जरूर मिलेगा. मैं उसमें से थोड़ा सा चना तुम्हें दे दूंगा. तुम क्यों नहीं मुझे आधी कीमत पर किताबें देते?" मैंने एक मजबूत दीवार की तरह झूठ गढ़ा. "अरे सुनो! गुड़ के साथ खाने के लिए हमारे घर में भी ढेर सारा चना है. हमें तुम्हारा चना नहीं चाहिए," उसने मेरे प्रस्ताव को हल्के में लेते हुए कहा.

मैं वैकल्पिक योजनाओं के बारे में सोच ही रहा था कि तभी रमेश की माँ ने आकर उससे कहा, "सुनो! तुम उसे आधी-कीमत पर अपनी किताबें क्यों नहीं दे देते?" रमेश की माँ बहुत अच्छी महिला हैं. वो एक नरम दिल इंसान हैं.

इसके अलावा, उन्हें कहानियाँ बहुत पसंद हैं. वो हर महीने चंदामामा और बालमित्र पत्रिकाएं मंगाती हैं. वो मुझे इसलिए प्यारी लगती हैं क्योंकि जब भी मैं उनके घर जाता हूं तब मैं उन पत्रिकाओं को बड़े चाव से पढ़ता हूं. "देखो रमेश, उसने तुमसे कुछ मांगा है, वो तुम क्यों नहीं दे देते? हर चीज को पैसे से नहीं आंकना चाहिए, बेटा!" रमेश की माँ ने कहा और फिर वो अंदर चली गईं.

मैंने वहीं से शुरू किया जहां रमेश की माँ ने छोड़ा था. "तुम्हारी माँ भी तुम्हें किताबें देने के लिए कह रही हैं. किसी को भी अपनी माँ की बातों के खिलाफ नहीं जाना चाहिए. अगर तुम अपनी माँ का कहना मानोगे तो तुम्हें पुण्य मिलेगा. अगर मेरी माँ ने मुझ से किताबें आधी-कीमत की बजाए मुफ्त में देने को कहा होता तो मैं उन्हें तुरंत दे देता," मैंने रमेश की ठुड्डी पकड़ते हुए कहा.

(मेरी माँ मरने पर भी मुझ से कभी वैसा नहीं कहतीं. अगर वो कहतीं भी, तो भी मैं कभी वैसा नहीं करता. क्या मैंने अपनी सातवीं कक्षा की "बज्जी-बज्जी" पाठ्यपुस्तकों को बूढ़े सेट्टी को वजन के हिसाब से नहीं बेचा, क्योंकि कोई भी लड़का उन्हें खरीदने को तैयार नहीं था. इसलिए मुफ्त में देने के बजाए मैंने उन्हें कबाड़ी को बेंच दिया.)

रमेश ने मुंह बनाया और कहा, "ठीक है! इस साल मैं तुम्हें उन्हें दे दूंगा. लेकिन अगले साल, मुझे पता है कि तुम फिर से मेरे पास नौवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के लिए वापस आओगे. पर तब मैं अपनी किताबें आधी-कीमत पर नहीं बेचूंगा."

"ठीक है, तुम वास्तव में बड़े नेक हो! उस समय तक, भगवान ने चाहा तो, मैं उन्हें पूरी कीमत पर खरीद लूंगा," मैंने कहा. इस तरह मैंने तीन-चौथाई कीमत वाली पाठ्यपुस्तकों को आधी-कीमत में खरीदा.

अब हालांकि आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के बारे में मेरी चिंता खत्म हो गई थी, लेकिन नोटबुक्स के बारे में मेरी चिंता अभी भी बनी हुई थी. नोटिस-बोर्ड पर लेपाक्षी कॉपियाँ का उल्लेख मेरे मुँह में पानी ला रहा था.

लेकिन क्या वे नोटबुक्स मेरे भाग्य में थीं? क्या मेरे पिता उन्हें खरीदने में सक्षम थे?

जब मैं उनके बारे में सोच रहा था तभी मैंने कंदुला मालकोंडाराव को देखा, जो गुलमोहर के पेड़ के नीचे खड़ा अपनी उंगलियां गिन रहा था.

"क्या मालकोंदाय्या? क्या गिन रहे हो?" मैंने उससे जाकर पूछा.

"कुछ नहीं, मेरे पास पाठ्यपुस्तकें खरीदने के लिए पैसे हैं. मेरे पास लेपाक्षी नोटबुक्स के भुगतान के लिए भी पैसे हैं. लेकिन हेडमास्टर कहते हैं कि लेपाक्षी नोटबुक आने में अभी थोड़ा समय लगेगा. तब तक मैं छह नोटबुक्स खरीदने की सोच रहा हूँ, हरेक विषय के कार्य के लिए एक नोटबुक?" उसने कहा.

उसके शब्दों से मेरा पेट ईर्ष्या से जलने लगा.

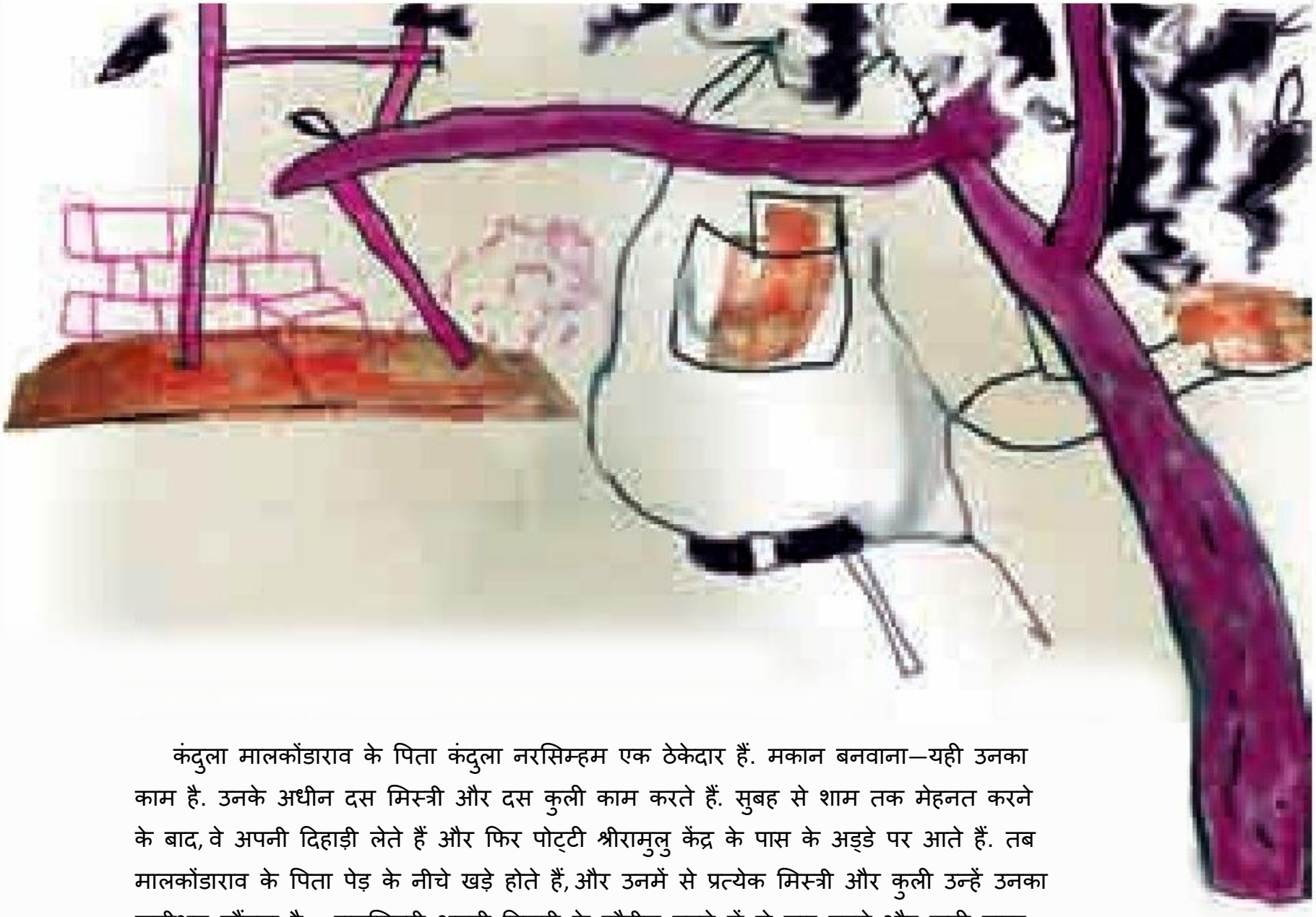

कंदुला मालकोंडाराव के पिता कंदुला नरसिम्हम एक ठेकेदार हैं. मकान बनवाना—यही उनका काम है. उनके अधीन दस मिस्त्री और दस कुली काम करते हैं. सुबह से शाम तक मेहनत करने के बाद, वे अपनी दिहाड़ी लेते हैं और फिर पोट्टी श्रीरामुलु केंद्र के पास के अड्डे पर आते हैं. तब मालकोंडाराव के पिता पेड़ के नीचे खड़े होते हैं, और उनमें से प्रत्येक मिस्त्री और कुली उन्हें उनका कमीशन सौंपता है - राजमिस्त्री अपनी दिहाड़ी के चौबीस रुपये में से चार रुपये, और कुली बारह रुपये में से दो रुपये. इसलिए उसके पिता की जेब हमेशा पैसों से गर्म रहती है.

और मेरे पिता?

पैसा एक दिन आता है, फिर दूसरे दिन नहीं आता है. इसके अलावा, मेरे पिता को उनके अधीन काम करने वाले मज़दूरों को भुगतान करना पड़ता है, और वे मज़दूर मेरे पिता को कुछ भी नहीं देते.

और इसीलिए, जब हम कॉपियाँ ख़रीदने के लिए पैसे माँगते हैं, तो मेरे पिता कहते हैं, "चलो देखेंगे," और मालकोंडाराव के पिता कहते हैं, "यह लो, यह लो."

फिर मैंने सोचा कि मुझे खुश होना चाहिए क्योंकि मालकोंडाराव को अगर कुछ मिला तो फिर मुझे भी कुछ मिलेगा. इसलिए, मैंने फिर एक योजना बनाई. "मालकोंडय्या, तुम्हें नोटबुक्स की समस्याओं के बारे में कुछ पता नहीं है," मैंने कहा. "नोटबुक्स दो प्रकार की होती हैं - श्रीनिवास और चेल्लापिल्ला. कुछ स्याही को सोखती हैं. कुछ पर, यदि आप एक तरफ लिखते हैं, तो उसे आप दूसरी तरफ देख सकते हैं. तुम मुझे अपने साथ ले चलना. मैं तुम्हारे लिए अच्छी नोटबुक्स चुनूंगा."

"वाह, तुमने मेरी जान बचा ली. ठीक है, चलो चलते हैं," उसने कहा.

उस शाम, हम दोनों पोट्टी श्रीरामुलु केंद्र गए और वहां उसके पिता से पैसे लिए और फिर चेल्लापिला बुक सेंटर गए और हमने वहां से छह कॉपियाँ खरीदीं. उनके सख्त कवर और नए कागज की महक का एक अलग ही आनंद था. लेकिन दुख की बात यह थी कि वो आनंद मेरा नहीं था.

लौटते समय रास्ते में मैंने उससे पूछा, "मलकोण्डय्या, क्या तुमने सातवीं कक्षा में ढेर सारी कॉपियाँ नहीं खरीदीं थीं? तुम्हारे पास कॉपियों का एक सेट स्कूल के लिए और दूसरा सेट ट्यूशन के लिए भी था. इसके अलावा मुझे याद है कि तुम महत्वपूर्ण प्रश्नों का प्रश्न बैंक बनाने के लिए अलग-अलग कापियाँ रखते थे. उन सभी कॉपियों का क्या हुआ?"

"वे सभी मेरे पास हैं. मैं उन्हें वजन के हिसाब से बेचूँगा."

"ऐसा मत करना वे सब मुझे दे दो. तुम्हारी लिखावट बहुत सुन्दर है. अगर हम उन्हें सातवीं कक्षा के किसी नए छात्र को देंगे, तो उसके लिए वो बहुत उपयोगी साबित होंगी और तुम्हें अपार पुण्य मिलेगा," मैंने उससे कहा.

"बहुत बढ़िया आईडिया है!" उसने कहा. फिर उसने घर की सारी पुरानी नोटबुक्स उठाईं. "इन्हें ले लो और दे दो," उसने कहा और उसने वे मेरे हवाले कर दीं.

कुल मिलाकर वो बारह नोटबुक्स थीं.

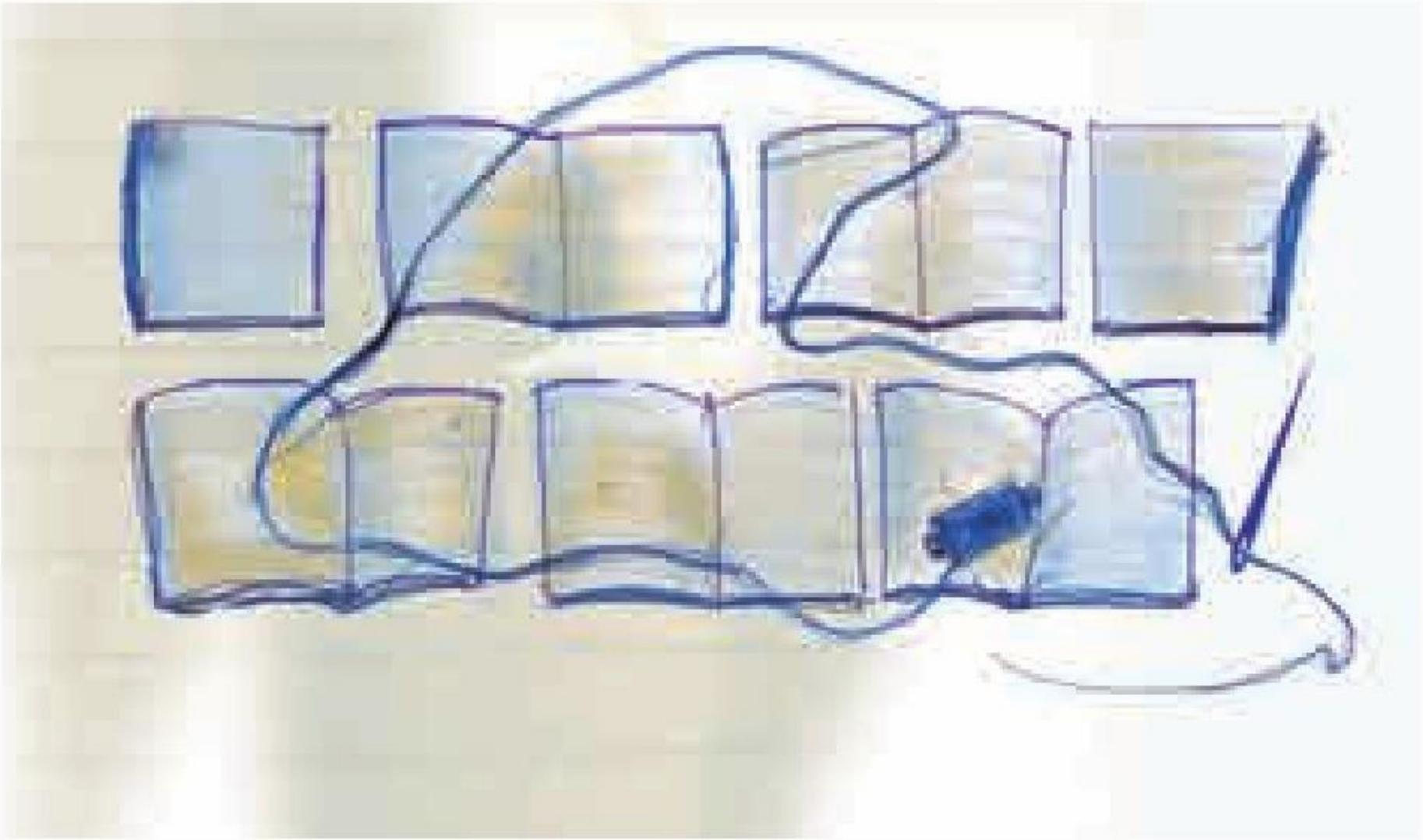

मैं उन सभी को घर ले गया, और मैंने उन्हें ध्यान से फर्श पर रखा. फिर मैं उनके सामने पालथी मारकर बैठ गया. मैंने प्रत्येक नोटबुक के खाली पन्नों को बड़े करीने से फाड़ा, उन्हें दो भागों में बाँटा, और फिर, चार्ट पेपर को ऊपर रखकर, मैंने सिलाई करके दो नोटबुक्स बनाईं.

उन्हें सिलने के बाद मैं उन्हें अपनी नाक के पास लाया. जब मैंने उन्हें सूँघा, तो उनमें से स्वादिष्ट पुराने कागज़ की खुशबू आ रही थी. मैंने सोचा, "लेपक्षी कॉपियाँ गाँव के तालाब में डूबें. क्या ये कॉपियां मेरे लिए काफी नहीं हैं?"

मैं घर से निकलकर बाहर खड़ा हो गया. मैंने गादेमसेट्टी रमेश को नौवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तकों के नए सेट के साथ घर जाते देखा.

मैं उसके पास गया. उसने अपनी जेब से थोड़ा सा चना निकालकर मुझे दिया. फिर मैंने उसकी नई पाठ्यपुस्तकों पर नज़र डाली, यह सोचा कि वे मेरे अपने ही बच्चे हैं जो एक साल बाद मेरे पास लौटने से पहले एक पराए घर में रहेंगे. फिर मैं उन पाठ्यपुस्तकों और गादेमसेट्टी रमेश के साथ उसके घर तक गया.

समाप्त